AIJRELPLS VOLUME 8, ISSUE 5 (2023, SEP/OCT) (ISSN-2456-3897)ONLINE
Anveshana's International Journal Of Research In Education, Literature, Psychology And Library Sciences

इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में चरित्र चित्रण की विविध शैलियाँ

सुनीता रानी[1] डॉ. दिग्विजय शर्मा[2]
[1]शोधार्थी [2]प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
ईमेल आईडी– ravi.sdy10@gmail.com

जो ी के सभी उपन्यास चरित्र प्रधान है। चरित्र प्रधान उपन्यासों में चरित्र वि लेशण प्रमुखता रहती है क्योंकि ऐसे उपन्यासों में अधिकांश पात्र जटिल प्रकृति के होते हैं। इन जटिल पात्रों के चरित्र चित्रण के लिए वर्णनात्मक एवं नाटकिय पानी की अपेक्षा विश्लेषणात्मक शैली ही अधिक उपयुक्त है। जोशी जी ने भी अपने प्राय सभी उपन्यासों में इस विश्लेषणात्मक गेलो को ही अपनाया है। उन्होंने अपने जटिल पात्रों के मानसिक स्थन में प्रवेश करके उनके आन्तरिक रहस्यों और अन्तरद्वन्दों का विश्लेषण प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। पात्रों के असामान्य आचरणों के पीछे काम करने वाली विभिन्न मानसिक स्थितियों का सुस्पष्ट एवं गहरा विश्लोप्रण उनके उपन्यासों में पाया जाता है। स्थान स्थान पर मानसिक द्वन्द्रों की व्याख्या, मनोभावों और तत्जन्य हाव भाव और चेष्टओं का पूरा विवरण भी है।

जोशी ने उपन्यासों में प्रमुख रूप से विश्लेषणात्मक भौली का प्रयोग किया है। लेकिन उनके उपन्यासों में अन्य शैलियों का प्रयोग भी हम देख सकते हैं। नाटकीय शैली का प्रयोग विशेषकर पत्र या डायरी के माध्यम से चरित्र चित्रण की पद्धति के अनेक उदाहरण उनके उपन्यास में हमें मिलते हैं। इसी प्रकार पात्रों के परस्पर संवादों से भी कई पर प्रकाश डाला गया है।

औपन्यासिक पात्रों का वर्गीकरण

पात्र विभाजन के बारे में विचार करने पर मैं मालूम हो जायेगा कि प्रेमचन्दोत्तर काल के औपन्यासिक पात्रों को पहले के समान दो एक वर्गों में विभाजित कर हम उनका सही मूल्यांकन नहीं कर पायेंगे क्योंकि प्रेमचन्दोत्तर काल में उपन्यास विधा मे विभिन्न शि ााओं में विकास प्राप्त किया है। प्रेमचन्दोत्तर काल में हिन्दी में राजनैतिक उपन्यास, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास आंचलिक उपन्यास आदि अनेक प्रकार के उपन्यासों की रचना हुई। विषय के बदलने के साथ साथ पात्रों के गठन में भी अन्तर आ जाना स्वाभाविक है। यही कार्य प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यासों में भी चरितार्थ हुआ। प्रतीकवाद अस्तित्ववादः मार्कसवाद मनोविश्लेषणवाद आदि के प्रभावों के परिणाम स्वरूप इस काल के उपन्यासों में नायक तथा चरित्र संबन्धी धारणाओं में बड़ा परिवर्तन आया है। इसलिए पूर्व प्रचलित पात्र विभाजन का सहारा लेकर इन पात्रों का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता।

उपन्यास के पात्रों को विभिन्न वर्गों में विभाजित करने की प्रवृत्ति बहुत पहले से ही होती जा रही है। अभी तक अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों द्वारा पात्र विभाजन का कार्य संपन्न आ है। अफेन फोर्टर डॉ. प्रतापनारायण टंडन आदि के पात्र विभाजन इसके उदाहरण है। उन्होंने पात्रों के कई भेद प्रस्तुत किए। यथा उफन– 1 सरल या स्पष्ट 2 मिश्रित या अस्पष्ट ।

फोर्स्टर– 1 । राउण्ड । गढ । 2 फ्लैट । सरल ।

डॉ. तापनारायण टंडन–

1. प्रमुख पात्र और सहायक पात्र
2. पुरुष पात्र तथा स्त्री पात्र
3. खलपात्र
4. यथार्थवादी पात्र
5. व्यक्तिवादी पात्र
6. मनोवैज्ञानिक पात्र
7. प्रतीकात्मक पात्र
8. ऐतिहासिक पात्र
9. राजनैतिक पात्र
10. सामाजिक पात्र
11. धार्मिक पात्र
12. पौराणिक पात्र
13. बुद्धिवादी पात्र

टंडन जी के अतिरिक्त हिन्दी के प्राय अन्य सभी आलोचकों ने एक ही प्रकार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है– वर्ग पात्र, व्यकिपात्रय सरल पात्र तथा गूढ पात्र य स्थिर पात्र तथा विकसनशील या गतिशील पात्र ।

प्रेमचन्दोत्तर काल के औपन्यासिक पात्रों को उनकी औपन्यासिक स्थिति के आधार पर दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं– 1 प्रमुख पात्र 2 गौण पात्र ।

सामान्यतया नायक और नायिका को उपन्यास में प्रमुखा दी जाती थी परन्तु प्रेमचन्दोत्तर काल के उपन्यास में प्रमुख पात्र नायक सम्बन्धी धारणाएँ बदल गयी है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में उत्कृष्ट गुणों से युक्त नायक के स्थान पर विभिन्न कुण्ठाओं और विकृतियों के शिकार दुर्बल नायकों को प्रस्तुत किया गया है। जोशी के उपन्यासों के सभी नायक इसी कोटि के हैं।

चारित्रिक विकास की दृष्टि से आधुनिक काल के पात्रों को दो वर्गों में विभाजित: कर सकते हैं– 1 सरल पात्र 2 जटिल पात्र । जिन पात्रों का चरित्र आदि से अन्त तक

सहजरूप विकसित होता है तथा जिनमें किसी प्रकार की गंथियों या उलझनों का अभाव है उन पात्रों को सरल पात्र कहते है। जटिल पात्र वै जिन का चरण दमित चासनाओं, कुण्ठाओं एवं मनोग्रंथियों के कारण अनिश्चित मा रहता है। चेतन, अचेतन के बीच समझौता न रहने के कारण जटिल पात्रों का जीवन सदा संघर्शीय रहता है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों के अधिकांश पात्र जटिल स्वभाव के होते हैं। जोशी के प्रायः सभी उपन्यासों के पात्र, विशेषकर प्रमुख पात्र जटिल प्रकृति के हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि उनके अधिकांश पात्र मध्यवर्ग के शिक्षित युवक–युवतियां हैं। अन्य वर्गों की तुलना में मध्यवर्ग का जीवन अधिक संघर्षरत है। शिक्षित होने के कारण अपने अभावग्रस्त जीवन से वे भनी भांति परिचित भी है। इसके फलस्वरूप उनमें कुण्ठा, हीन भावना तथा मानसिक असतोष उत्पन्न हो जाते हैं।

आधुनिक काल के उपन्यासों की एक अन्य विशेषता यह है कि इस युग के औपन्यासिक पात्रों के चरित्र निरूपण में आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। मनोविज्ञान शास्त्रियों ने जिन मनोवैज्ञानिक प्रकारों का उल्लेख अपने ग्रंथों में दिया है उन सब का प्रयोग इस काल के उपन्यासों में तुम देख सकते है। फ्रायड, एडलर और युग के मनोवैज्ञानिक तत्वों का जो प्रभाव जोशी जी के उपन्यासों पर पड़ा है वह विशेष उल्लेखनीय है। युग ने मनुष्यों को तीन भागों में विभाजित किया है–1 बहिर्मुखी 2 अन्तर्मुखी 3 उभयमुखी। उपर्युक्त विभाजन के आधार पर परखने पर मालूम पड़ेगा कि जोशी के अधिकांश पात्र अन्तर्मुखी हैं।

आधुनिक उपन्यासों में चित्रित पात्रों के समग्र व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर यदि हम उनका विशद अध्ययन करें तो मूल रूप से उन्हें इन दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं–

1. सामान्य पात्र
2. असामान्य पात्र।

सामान्य पात्र

सामान्य पात्र से तात्पर्य उपन्यास के उन पात्रों से है जिनमें कोई कुण्ठा मनोरोग विकृति नहीं है। यह सर्वविदित है कि व्यक्ति के आचरणा से उसके तन–मन की का सीधा सम्बन्ध है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति आचरण भी सामान्य होता है। दूसरे शब्दों में करने पर जिन औपन्यासिक पात्रों में किसी प्रकार की मानसिक विकृति, कुण्ठा एवं हीनता गधी का अभाव है उन्हें सामान्य पात्र कर सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि पात्रों के जीवन में आत्मसंघर्ष तथा अन्य समस्याओं का एकदम है। ये जीवन में उत्पन्न होनेवाले अन्तरद्वन्द एवं असंतोष के सामने हतप्रभ न कर के अनुकूल अचिरन करके अपने को संतुलित बनाए रखते हैं।

असामान्य पात्र

असामान्य पात्र ते तात्पर्य है असामान्य आवरणों से युक्त पात्र असामान्य आचरण के पीछे कोई कारण न कोई अवश्य रहता है। फ्रायड एडलर, युग आदि मनोविज्ञान—शास्त्रियों न अपने निजी अनुभवों से यह व्यक्त किया है कि व्यक्ति के असामान्य आचरण के मूल में उसकी असामान्य मानसिक और परीरिक स्थिति ही काम करती है. दलित काम वासना, हीनता या उच्चता की ग्रंथि अहंभाव कुण्ठा, रुग्ण आसक्ति तथा अन्य मानसिक विकृतियों के कारण व्यक्ति के आचरण में असंतुलन एवं असामान्यता आ जाती है।

असामान्य पात्रों के अन्तर्गत कुण्ठाग्रस्त, अहप्रेमी तथा मानसिक ग्रंथियों से युक्त पात्रों के अतिरिक्त शारीरिक दृष्टि से विकलांग और व्याधिग्रस्त व्यक्तियों परामानव आदि भी आते हैं। अर्थात् किसी भी दृष्टि या कारण से सामान्य माने गये पात्रों ने आचरण से विरुद्ध या भिन्न चरण करने वाले सभी पात्र असामान्य पात्र की कोटी में आते हैं। डॉ सुजाता का कथन है ''असामान्य चरित्र से तात्पर्य प्रेमचन्द के बाद के उपन्यासों में ऐसे सभी पात्रो अथवा चरित्रों से हैं जिनका व्यवहार, विचार किसी मानसिक कुण्ठा या रोग, किसी तरह की शारीरिक अस्वस्थता अध्या विकलांगता भूत प्रेत के प्रभाव आदि के कारण असंतुलित प्रतीत होता है और उस असंतुलन के कारण वे उपन्यास में वर्णित परिस्थितियों और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में असफल रहते है।''

सामान्य, असामान्य की दृष्टियों से जोशी के उपन्यासों पर विचार करने पर यह मालूम हो जायेगा कि उनके अधिकांश पात्र असामान्य हैं। प्रायः सभी उपन्यासों के नायकः असामान्य प्रकृति के है। इस विषय पर डॉ. कृष्णदेव झारी का मत है उनके कथा नायक नन्दकिशोर, सन्यासी, रंजन जिप्सी, इन्द्र मोहन, पर्द की रानी, महीप, निर्वासित, पारसनाथ, प्रेत और छाया सब एक ही प्रकार के दुर्बल और रूग्ण पात्र है।'' यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य यह है कि जोशी के उपन्यासों के नायकों की यह दुर्बल प्रकृति कोई आकस्मिक बात नहीं है। उपन्यासों के दुर्बल नायक'' नामक अपने निबंध में जोषी जी दुर्बल स्वभाव से युक्त नायकों का होना अपने उपन्यासों की विशेषा बताते हैं। उनका कथन है कि उन्होंने जानबूझकर दुर्बल प्रकृति के नायकों को चुना है।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में मनोविज्ञान के नव विकसित सम्पदाय मनोविश्लेषणवाद का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। इसका परिणाम यह निकला है कि पात्र के हर व्यवहार तथा चिंतन का मल अचेतन, दमित काम में खोजने का प्रयात किया जाने लगा और उपन्यासकार ने पात्र को सामाजिक परिवेष से हटा कर अपने मन के आन्तरिक परिवेश में उलझा दिया।'' इस का खूब प्रभाव जोशी जी पर भी पड़ा है। इसी कारण से उन्होंने अपने अधिकांश पात्रों को अप्रेमी कुण्डागस्थ, हीनता तथा अच्च भावना की ग्रंथियों से पीडित, संदेशील तथा अन्य मानसिक विकृतियों से युक्त असामान्य पात्र के रूप में चित्रित किया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उनके कवि की प्रेयसी नामक उपन्यात को छोड़कर अन्य सभी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक तत्वों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। यहाँ एक बात

विशेष उल्लेखनीय है कि जोशी के जितने भी पात्र मनोवैज्ञानिक तथ्यों से प्रभावित है वे सब असामान्य पात्र की कोटी में आने वाले है। इसलिए जोगी के चरित्र चित्रण में जो मनोवैज्ञानिक पक्ष है उसपर अध्ययन करते समय केवल उनके असामान्य पात्रों के चारित्रिक विश्लेषण की आवश्यकता ही महसूस होती है। इसी दृष्टि से आगे उनके समस्त ''असामान्य पात्रों का विशद विश्लेषण ही प्रस्तुत किया जाएगा।

लज्जा

लज्जा जोशी जी के प्रथम उपन्यास 'लज्जा की नायिका है। वह एक एमान्त परिवार में पाली सुन्दर एवं सुशिक्षित युवती है। उपन्यास के प्रारंभ में हम लज्जा की बाल–सुलभ कोतुहल, विस्मय, भय, हट आदि से युक्त एक कुशाग्रबुदि बाला के रूप में देखते है। लेकिन यौवन से युक्त होने के साथ साथ उसमें प्रेम का उन्माद भी बढ़ने लगा। आली मानसिक विकृतियों के कारण उसका सारा जीवन संघर्षमय हो जाता है।

लज्जा दमित काम वासना का शिकार है। अपने रूप सौन्दर्य से लोगों को मोहित कराने की इच्छा से प्रेरित होकर वह अक्सर अपने पिता के पास जाकर बैवती थी और वहाँ आने वाले युवकों के साथ अपना हेलमेल बढाती थी। अपने इस गूढ उद्देष्य को स्वीकार करके वह स्वयं करती है– प्रकट में यद्यपि में बिना उद्देश्य के आती थी, तथापि एक अस्पष्ट उद्देश्य मेरे अंतस्थल में वर्तमान रहता था। वह उद्देश्य था लुब्ध और मुग्ध पुरुषों को अपने अतुल रूप से छकाने का।'' अपनी दमित वासना के कारण वह डॉ. कन्यालाल से प्रेम–सम्बन्ध जोड़ती है। प्रोफ प्रेम भटनागर के शब्दों में लज्जा का डॉक्टर के प्रेम–पाश में बाघ जाना काम – मलक है।'' इसी कारण अपने भाई द्वारा लम्पट कन्हैयालाल का यथार्थ परिचय मिलने पर भी उसे छोड़ने को वह तैयार नहीं होती। वह स्वयं अपने प्रेमी से करती है– ''प्रियतम तुम अगर कृष्ण की तरह सोलह हजार गोपियों को भी अपने पास रखो तो भी मैं तुम्हें प्यार करना नहीं छोड़ सकती।''

प्रेम से अन्धा हो जाने वाली लज्जा का आचरण उसके नाश का कारण बन जाता है। लोक निन्दा का भय या कुल महिमा की चिंता उसे अपने उन्मुक्त जीवन से विचलित न कर सकती। लेकिन एक नृशांत व्यक्ति के साथ अपनी प्रिय बहिन के उन्मुक्त प्रेम आवरण को देखकर उसका छोटा भाई रंजन आत्महत्या कर लेता है तो वह एकदम टूट जाती है। स्वयं अपने को भाई की घातिका समझकर भग्नाश रहने वाली लज्जा को छोडकर डॉक्टर साहब उसकी सहेली कमलिनी के साथ नया सम्बन्ध जोड़ देता है। अपने प्रेमी का यहनिष्ठुर आचरण उस के लिए और भी कठिन प्रहार बन जाता है। अपने इस अप्रत्याशित पतन को देखकर हाकार मचने के सिवाय वह कुछ भी नहीं कर सकती है।

लज्जा के व्यक्तित्व में अंह का प्रभाव भी डूब मिलता है। इसी अहं के कारण वहअपने प्रिय भाई के उपदेश को भी ठुकरा कर देती है। अपने अहं की तृप्ति के लिए वह

अपने प्रेमी को कॉलेज ले जाकर अपनी सहेलियों से उसका परिचय कराती है। बुर्जुवा परिवार की नारी होने के कारण दीन–दुखियों को प्रति सहानुमति नामक कोई चीज उसके मन में नहीं है। माधवी परिवार की हीनता से परिचित होने पर भी उसका कुष्ठ भी प्रभाव इसपर कभी नहीं पड़ता।

लज्जा हीनता की भावना से भी पीडित है। एडलर के अनुसार विश्व का हर एक मानव हीनता की गंधि से जकड़ा हुआ है। इसी कारण वह अपने को अधिक बलशाली तथा प्रभुत्व सम्पन्न बनाने में संलग्न रहता है। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कभी वह अपने मनोनुकूल आश्रय को ग्रहण करता है। यहाँ लज्जा भी अपनी मानसिक हीनता को मिटाने के लिए डॉक्टर साहब का अवलम्बन लेती है। वह स्वयं कारती है मेरे मन की तत्कालीन सीनता केवल उनहीं के साथ मिलकर तख दुख की बातें करने से मिट सकती थी।''''

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जोशी जी ने लज्जा का चित्रण दमित वासना तथा अन्य मानसिक विकृतियों के कारण अपने तथा स्वजनों के जीवन को बर्बाद कर देने वालीएक नारी पात्र के रूप में किया है।

सदंर्भ सूचीः

1. डॉ. सुजाता, हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृ० 112
2. डॉ. सुजाता, हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृ0 131
3. डॉ. कृष्णदेव झारी, उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी, पृ0 159
4. डॉ सुजाता, हिन्दी उपन्यासों के असामान्य चरित्र, पृ0 52
5. इलाचन्द्र जोशी, लज्जा, पृ० 2
6. प्रोफ. प्रेम भटनागर, इलाचन्द्र जोशी साहित्य और समीक्षा, पृ0 61
7. इलाचन्द्र जोशी, लज्जा, पृ0 77